संधि / संहिता

❀ श्री रामकुमार शास्त्री ❀

व्युत्पत्ति:-

सम् उपसर्ग पूर्वक 'धा' (डुधाञ्) धातु से 'कि' प्रत्यय करने पर सन्धि शब्द बनता है।
कि प्रत्ययान्त शब्द नित्य पुल्लिंग होता है।
इसलिए 'संधि' शब्द पुल्लिंग है।

व्युत्पत्ति लभ्यार्थ:-

वर्ण संधानं सन्धि: अर्थात् वर्ण मेलनं सन्धि:।
दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं।

परिभाषा:-

लोपागमादेश वर्ण विकारा: सन्धि: अर्थात् किसी वर्ण का लोप, आगम, आदेश होना या किसी वर्ण मे विकार होना सन्धि कहलाता है।

(i) **लोप कार्य** - किसी वर्ण का लोप हो जाना संधि कहलाता है।

जैसे:- (हरि:) हरिर् + रम्य: - हरी रम्य:
(विसर्ग लोप सन्धि)

Scanned by CamScanner

(2) **आगम** :→ दो वर्णों के मध्य किसी नये वर्ण का आ जाना आगम कहलाता है।

आगम मित्र के समान होते हैं (आगमाः मित्रवद् भवन्ति)

जैसे- शिव + छाया = शिवच्छाया (तुकागम)

तुक्, कुट्, धुट्, नुट् आदि प्रमुख आगम होते हैं।

(3) **आदेश** :- किसी एक वर्ण या दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाना आदेश है।

जैसे:- रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई = ए)

(4) **विकार** :→ किसी एक वर्ण के स्थान पर किसी अन्य दूसरे वर्ण का हो जाना सन्धि कार्य में विकार कहलाता है।

जैसे:- जगत् + ईशः = जगदीशः (त् → द्)

(5) **प्रकृतिभाव** → स्वर संधि के प्रसंग में सन्धि प्राप्त होने पर भी संधि कार्य नहीं करना प्रकृतिभाव कहलाता है-

जैसे - हरी + एतौ = हरी एतौ

Scanned by CamScanner

संधि/संहिता की नित्यता/अनित्यता

* तीन स्थानों पर संधि नित्य होती है।

① संधि करने पर एक पद बने तो संधि कार्य नित्य होता है।

जैसे – चे + अः = चयः , जे + अः = जयः
अनु + अयः = अन्वय

② उपसर्ग व धातु में नित्य संधि कार्य होता है।

जैसे - प्र + एति = प्रैति , नि + अवसत् = न्यवसत्

③ समास के प्रसङ्ग में विग्रह शब्दों में संधि कार्य नित्य होता है।

जैसे - बहुव्रीहि समास में – दश + आननः = दशाननः
कर्मधारय " " – नील + अम्बरम् = नीलाम्बरम्
षष्ठी तत्पु. " " – गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः

* वाक्य में सन्धि कार्य वक्ता की इच्छा पर (विवक्षा पर) निर्भर करता है वह चाहे तो संधि करें चाहे तो संधि न करे।

जैसे- न अहं गच्छामि - नाहं गच्छामि - नाहङ्गच्छामि।
राजा रामः बभूव - राजा रामो बभूव

Scanned by CamScanner

"परः सन्निकर्षः संहिता"

पूर्व वर्ण और पर वर्ण में अत्यधिक समीपता होने पर उन दोनों वर्णों की संहिता संज्ञा होती है अर्थात् उन दोनों वर्णों में संधि कार्य हो जाता है। संहिता संज्ञा का प्रयोजन संधि कार्य करना है।

→ अत्यधिक समीपता से तात्पर्य दोनों वर्णों के मध्य किसी अन्य तीसरे वर्ण के नहीं होने से है।

जैसे - राम + अयनम् → रामायणम्
(अ अ)

यहाँ रेखांकित अ वर्णों के मध्य किसी भी वर्ण का व्यवधान नहीं है अतः सन्धि कार्य हो जाता है।

Note:- ① सम् + धा (हि) + क्त + टाप् प्रत्यय करने पर संहिता शब्द बनता है।

संहिता शब्द स्त्रीलिंग है जबकि सन्धि शब्द पुल्लिंग शब्द है।

जैसे — का संहिता ? — स्त्रीलिंग
क: सन्धि: ? — पुल्लिंग

Scanned by CamScanner

संधि के भेद

- लघु सिद्धान्त कौमुदी में वरदराजाचार्य के अनुसार सन्धि के तीन भेद हैं।

3 भेद

1. अच्/स्वर संधि (प्रकृतिभाव)
2. हल्/व्यञ्जन संधि
3. विसर्ग संधि (स्वादि)

Note - सिद्धान्त कौमुदी में भट्टोजीदीक्षित के अनुसार सन्धि के **5 भेद** हैं।

1. अच् सन्धि
2. प्रकृतिभाव सन्धि
3. हल् सन्धि
4. विसर्ग सन्धि
5. स्वादि सन्धि

YouTube SUBSCRIBE NOW Sanskrit saraswati ramkumar shashtri
Find us on: facebook रामकुमार शास्त्री संस्कृत सरस्वती @Sanskritsaraswati
Join Us on Telegram रामकुमार शास्त्री संस्कृत सरस्वती https://t.me/sns12 मोबाईल एप : संस्कृत सरस्वती
Scanned by CamScanner

<1> सवर्ण दीर्घ सन्धि - "अकः सवर्णे दीर्घः"

नियम :-

अ, इ, उ, ऋ, ऌ स्वरों के बाद इन्ही के समान वर्ण होने पर वर्ण के स्थान पर दीर्घ वर्ण एकादेश होता है।

अक् + सवर्ण => सवर्ण दीर्घ एकादेशः

अ/आ	+ अ, आ	=	आ
इ/ई	इ, ई	=	ई
उ/ऊ	उ, ऊ	=	ऊ
ऋ/ॠ	ऋ, ॠ	=	ॠ
ऌ	ऌ	=	ऌ (ऌ का दीर्घ नही होता है।)

दैत्य + अरिः
दैत्य् अ+अ रिः
दैत्य् आ रिः
दैत्यारिः

मुर + अरिः = मुरारिः
परम + अर्थः = परमार्थः
स्व + अङ्के = स्वाङ्के
गृह + अभ्यन्तरे = गृहाभ्यन्तरे
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
विद्या + आलय = विद्यालय
जन + अन्तिकम् = जनान्तिकम्
सत्य + आग्रहः = सत्याग्रहः !

Scanned by CamScanner

कुश + आसनम् = कुशासनम्
परम + आनन्दः = परमानन्दः
देव + आनन्दः = देवानन्दः
सुधा + आकरः = सुधाकरः
रत्न + आकरः = रत्नाकरः
राम + आश्रितः = रामाश्रितः
शिव + आलयः = शिवालयः
महा + आनन्दः = महानन्दः
शिव + आधारः = शिवाधारः
तथा + अपि = तथापि
च + अर्थः = चार्थः
सा + अपि = सापि
न + अस्ति = नास्ति

(ii) इ/ई + इ/ई = (ई)

श्री + ईशः
श्र् ई + ई शः
श्रीशः

नदी + ईशः = नदीशः
पृथ्वी + ईश्वरः = पृथ्वीश्वरः
कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः
मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः

Scanned by CamScanner

अति + इदम् = अतीदम्
इति + इति = इतीति
पठति + इह = पठतीह
करोति + इदम् = करोतीदम्
महती + इच्छा = महतीच्छा
महती + ईहा = महतीहा
अग्नि + इष्टः = अग्नीष्टः
अग्नि + ईप्सितम् = अग्नीप्सितम्
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्र
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
परि + ईक्षा = परीक्षा

(iii) उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ दीर्घ 'ऊ' एकादेशः

भानु + उदयः
भान् उ+उ दयः
ऊ
भानूदयः

गुरु + उदयः = गुरूदयः
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
गुरु + उपकारः = गुरूपकारः
लघु + उत्तरम् = लघूत्तरम्
भू + उदयः = भूदयः
भानु + ऊर्जा = भानूर्जा

CS Scanned with

Scanned by CamScanner

लघु + ऊर्मि: = लघूर्मि:

सिन्धु + ऊर्मि: = सिन्धूर्मि:

चमू + उदधि: = चमूदधि:

मधु + उत्सव: = मधूत्सव:

वधू + उल्लास: = वधूल्लास:

वधू + उत्सव: = वधूत्सव:

सु + उक्ति: = सूक्ति:

भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्

(iv) ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ (दीर्घ एकादेश:)

होतृ + ऋकार:

होत् ऋ + ऋकार:

ॠ

होतॄकार:

पितृ + ऋकार: = पितॄकार:

मातृ + ऋकार: = मातॄकार:

पितृ + ऋद्धि: = पितॄद्धि:

मातृ + ऋणम् = मातॄणम्

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

पितृ + ऋषि: = पितॄषि:

भ्रातृ + ऋकार: = भ्रातॄकार:

कर्तृ + ऋणम् = कर्तॄणम्

Scanned by CamScanner

(v) ऌ + ऌ = ॡ (ऌ का दीर्घ नहीं होता)

ॡ + ऌकारः

ॡ + ऌ कारः

ॡ कारः

गम्लृ + ऌकारः = गम्लृकारः

पद्लृ + ऌकारः = पद्लृकारः

ऌ + ऌवर्णः = ऌवर्णः

गम्लृ + ऌवर्णः = गम्लृवर्णः

विष्लृ + ऌवर्णः = विष्लृवर्णः

Scanned by CamScanner

(2.) गुण सन्धि - ("आद्‌गुणः")

अ, ए, ओ इन तीन स्वरों को गुण वर्ण कहते हैं। सन्धि कार्य करते समय 'अ' के स्थान पर 'अर्' और 'अल्' हो जाता हैं।

नियम :-

अ या आ स्वर के बाद इ, उ, ऋ, ऌ स्वरों के रहने पर पूर्व और पर वर्ण के स्थान पर गुण वर्ण एकादेश होता हैं।

गुण वर्ण - अ, ए, ओ

पूर्व वर्ण		पर वर्ण		एकादेश	उ. स्थान
अ / आ	+	इ / ई	=	ए	कण्ठ तालु
अ / आ	+	उ / ऊ	=	ओ	कण्ठ ओष्ठ
अ / आ	+	ऋ / ॠ	=	अर्	कण्ठ मूर्धा
अ / आ	+	ऌ	=	अल्	कण्ठ दन्त

(i) अ/आ + इ/ई = 'ए' (एकादेश)

रमा + ईशः

रम् आ + ई शः

(आ + ई = ए)

रमेशः

Scanned by CamScanner

सुर + ईशः = सुरेशः
महा + ईशः = महेशः
राका + ईशः = राकेशः
गुडाका + ईशः = गुडाकेशः
तथा + इति = तथेति
तथा + इव = तथैव
मम + इदम् = ममेदम्
मम + इह = ममेह
मम + इच्छा = ममेच्छा
यथा + इष्टः = यथेष्टः
स्व + ईच्छा = स्वेच्छा
उप + ईक्षा = उपेक्षा

(ii) अ/आ + उ/ऊ = ओ (एकादेश)

सूर्य + उदयः
सूर्य् अ + उदयः
ओ
सूर्योदयः

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
चरण + उदकम् = चरणोदकम्
मम + उत्तरम् = ममोत्तरम्
जन्म + उत्सवः = जन्मोत्सवः
वन + उत्सवः = वनोत्सवः

Scanned by CamScanner

नव + ऊढा = नवोढा
जल + ऊष्मा = जलोष्मा
जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः
पर + उपकारः = परोपकारः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
महा + उदयः = महोदयः
शर्व + उपमम् = शर्वोपमम्
अन्य + उक्तयः = अन्योक्तयः
पूर्व + उपमा = पूर्वोपमा
विद्या + उत्तमा = विद्योत्तमा
महा + ऊषरः = महोषरः
पाद + ऊनम् = पादोनम्

(ii) अ/आ + ऋ/ॠ = अर् (एकादेश)

कृष्ण + ऋद्धिः
अ + ऋ
कृष्ण् अर् द्धिः
कृष्णर्द्धिः

राम + ऋद्धिः = रामर्द्धिः
तव + ऋद्धिः = तवर्द्धिः
राज + ऋषिः = राजर्षिः
देव + ऋषिः = देवर्षिः
ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः
महा + ऋषिः = महर्षिः

Scanned by CamScanner

उत्तम + ऋण: = उत्तमर्ण:

अधम + ऋण: = अधमर्ण:

सदा + ऋण: = सदर्ण:

भरत + ऋषभ: = भरतर्षभ:

पुरुष + ऋषभ: = पुरुषर्षभ:

ग्रीष्म + ऋतु: = ग्रीष्मर्तु:

शीत + ऋतु: = शीतर्तु:

(iv) अ/आ + लृ = अल्

तव + लृकार:

तव् अ + लृ कार:

अल्

तवल्कार:

मम + लृकार: = ममल्कार:

सदा + लृकार: = सदल्कार:

महा + लृकार: = महल्कार:

तव + लृवर्ण: = तवल्वर्ण

महा + लृवर्ण = महल्वर्ण:

तव + लृदन्त: = तवल्दन्त:

मम + लृदन्त: = ममल्दन्त:

Scanned by CamScanner

(3.) वृद्धि संन्धि ("वृद्धिरेचि")

आ, ऐ, औ इन तीन स्वरों को वृद्धि वर्ण कहते हैं।

नियम- अ/आ के बाद ए, ओ, ऐ, औ स्वर हो तो पूर्व और पर वर्ण के स्थान पर वृद्धि वर्ण एकादेश होता है।

पूर्व वर्ण		पर वर्ण		एकादेश वृद्धि	
अ/आ	+	ए	=	ऐ	कण्ठ+तालु
अ/आ	+	ओ	=	औ	कण्ठ+ओष्ठ
अ/आ	+	ऐ	=	ऐ	कण्ठ+तालु
अ/आ	+	औ	=	औ	कण्ठ+ओष्ठ

(i) अ/आ + ए/ऐ = ऐ (वृद्धि एकादेश)

कृष्ण + एकता
अ + ए
ऐ
कृष्णैकता

जन + एकता = जनैकता
तथा + एव = तथैव
सदा + एव = सदैव
तव + एव = तवैव
सा + एषा = सैषा
सभा + एषा = सभैषा
उद्योगेन + एव = उद्योगेनैव

Scanned by CamScanner

च + एक + एकः = चैकैकः
अत्र + एव = अत्रैव
पञ्च + एते = पञ्चैते
मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
जन + ऐक्यम् = जनैक्यम्
देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्
कृष्ण + ऐश्वर्यम् = कृष्णैश्वर्यम्
महा + ऐरावतः = महैरावतः
महा + ऐन्द्रजालिकः = महैन्द्रजालिकः

(ii) अ/आ + ओ/औ = औ (वृद्धि एकादेश)

गङ्गा + ओघः
आ + ओ
औ
गङ्गौघः

जल + ओघः = जलौघः
मधुर + ओदनः = मधुरौदनः
तण्डुल + ओदनः = तण्डुलौदनः
उष्ण + ओदनः = उष्णौदनः

कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = कृष्णौत्कण्ठ्यम्
तव + औत्कण्ठ्यम् = तवौत्कण्ठ्यम्
राम + औदार्यम् = रामौदार्यम्
कृष्ण + औदार्यम् = कृष्णौदार्यम्
तव + औदासीन्यम् = तवौदासीन्यम्
वन + औषधिः = वनौषधिः

Scanned by CamScanner

मधुर + औषधिः = मधुरौषधिः
दिव + औकसः = दिवौकसः
प्र + औद्योगिकी = प्रौद्योगिकी

वृद्धि संधि के विशेष उदाहरण

(i)
प्र + एति = प्रैति
उप + एति = उपैति
प्र + एधते = प्रैधते
उप + एधते = उपैधते
— पररूप का अपवाद

प्रष्ठ + ऊहः = प्रष्ठौहः
विश्व + ऊहः = विश्वौहः
भार + ऊहः = भारौहः
— गुण का अपवाद

(ii) अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिनी → अक्षौहिणी - गुण का अपवाद

(iii)
स्व + ईरः = स्वैरः
स्व + ईरी = स्वैरी
स्व + ईरिणी = स्वैरिणी
— गुणापवाद

Scanned by CamScanner

(iv). प्र + ऊहः = प्रौहः]
प्र + ऊढ = प्रौढः] गुणापवाद
प्र + ऊढिः = प्रौढिः]

प्र + एषः = प्रैषः] पररूप अपवाद
प्र + एष्यः = प्रैष्यः]

(v) सुख + ऋतः
अ + ऋ
आर्
सुखार्तः
दुःख + ऋतः = दुःखार्तः] गुणापवाद
क्षुधा + ऋतः = क्षुधार्तः]

* क्षुधा + आर्तः = क्षुधार्तः] सवर्ण दीर्घ संधि

(vi) प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति] गुण का अपवाद
उप + ऋच्छति = उपार्च्छति]

Scanned by CamScanner

(vii) प्र + ऋणम् = प्रार्णम्
वत्सतर + ऋणम् = वत्सतरार्णम्
कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम्
वसन + ऋणम् = वसनार्णम्
ऋण + ऋणम् = ऋणार्णम्
दश + ऋणः = दशार्णः

] गुण का अपवाद

विशेष

सदा + ऋणम् = सदर्णम्
उत्तम + ऋणः = उत्तमर्णः

] गुण सन्धि

Scanned by CamScanner

(4) **यण् संधि** - "इको यणचि"

य् व् र् ल् इन चार वर्णों को यण् वर्ण कहते हैं।

नियम -
इ, उ, ऋ, ऌ इन चार स्वरों के स्थान पर क्रमशः य् व् र् ल् आदेश हो जाते हैं। यदि बाद में असमान स्वर हो।
"क्योंकि समान स्वर होने पर सवर्ण दीर्घ हो जाता है।"

इक् → यण् + अच् (स्वर)

इ / ई → (य्)
उ / ऊ → (व्)
ऋ / ॠ → (र्)
ऌ → (ल्)
\+ असमान स्वर

"यथासंख्यमनुदेशः समानाम्" क्रमशः होते हैं।

(i) इ / ई + असमान स्वर
→ य्

सुधी + उपास्यः
सुध् ई + उ पास्यः
↓ य्
सुध्युपास्यः

CS Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

यदि + अपि = यद्यपि / यद्यपि

इति + आदि = इत्यादि

इति + उवाच = इत्युवाच

नि + ऊनः = न्यूनः

प्रति + एकम् = प्रत्येकम्

अधि + अक्षः = अध्यक्षः

प्रति + अक्षरम् = प्रत्यक्षरम्

महती + आवश्यकता = महत्यावश्यकता

हि + अनन्ताः = ह्यनन्ता

हि + अङ्गना = ह्यङ्गना

प्रति + ऊहः = प्रत्यूहः

प्रची + औ = प्रच्यौ

नदी + उदकम् = नद्युदकम्

प्रति + आशा = प्रत्याशा

नि + आयः = न्यायः

अधि + आदेशः = अध्यादेशः

Scanned by CamScanner

(ii) उ / ऊ + असमान स्वर

↓

व्

मधु + अरि:

मध् उ अरि

↓

व्

मध्वरि:

अनु + अय: = अन्वय:

गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा

गुरु + आदेश: = गुर्वादेश:

वधू + आदेश: = वध्वादेश:

वधु + आगता = वध्वागता

चमू + आदेश: = चम्वादेश:

लघु + आदि = लघ्वादि

सु + अस्ति = स्वस्ति

सु + आदि = स्वादि

सु + आगतम् = स्वागतम्

स्व + आगतम् = स्वागतम् → सवर्ण दीर्घ

खलु + एव: = खल्वेव:

पठतु + अत्र = पठत्वत्र

उ + ऋक्ष: = वृक्ष:

Scanned by CamScanner

(iii) ऋ / ॠ + असमान स्वर
↓
र्

धातृ + अंशः
धात् ऋ + अंशः
↓
र्
धात्रंश / धात्रंशः

पितृ + अंशः = पित्रंशः
मातृ + अंशः = मात्रंशः
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
मातृ + आदेशः = मात्रादेशः
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा
मातृ + उपकारः = मात्रुपकारः
मातृ + अङ्गः = मात्रङ्गः
कर्तृ + आयुः = कर्त्रायुः
भ्रातृ + अनुमतिः = भ्रात्रनुमतिः
धातृ + आगमनम् = धात्रागमनम्

(iv) ऌ + असमान स्वर
↓ ल्

ऌ + आकृतिः
ल् + आकृतिः
लाकृतिः

ऌ + आकारः = लाकारः
ऌ + आदेशः = लादेशः
ऌ + अनुबन्धः = लनुबन्धः
ऌ + अक्षयः = लक्षयः

Scanned with

Scanned by CamScanner

गम्लृ + आदेशः = गम्लादेशः

घस्लृ + आदेशः = घस्लादेशः

ॡ + अङ्ः = लङ्ः

ॡ + आद्यारितम् = लाद्यारितम्

Scanned by CamScanner

⑤ अयादि सन्धि "(एचोऽयवायावः)"

अय्, अव्, आय्, आव् को अयादि कहते हैं।

नियम-

ए, ओ, ऐ, औ (एच्) स्वरों को क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं यदि पर में समान या असमान स्वर हो।

एच् → अयादि + स्वर

ए → अय्
ओ → अव्
ऐ → आय्
औ → आव्

+ समान या असमान स्वर — क्रमशः आदेश होते हैं।

(i) ए + स्वर → अय्

ने + अनम्
न् ए + अनम्
न् अय् + अनम्
नयनम्

चे + अनम् = चयनम्
शे + अनम् = शयनम्
जे + अः = जयः

Scanned with

Scanned by CamScanner

विजे + अः = विजयः

रामे + औः = रामयौः

गणे + अति = गणयति

मुने + ए = मुनये

Imp. हरे + ए = हरये

क्षे + अः = क्षयः

शे + इतः = शयितः

कपे + ए = कपये

(ii) ओ + स्वर
↓
अव्

पो + अनम्

प् ओ + अनम्
↓
अव्

पवनम्

भो + अनम् = भवनम्

भो + अति = भवति

भो + आमि = भवामि

पो + इत्रम् = पवित्रम्

Scanned by CamScanner

शो + अः = शवः
भो + अः = भवः
हो + अनम् = हवनम्
श्रो + अनम् = श्रवणम्
विष्णो + ए = विष्णवे
गुरो + ए = गुरवे
भानो + ए = भानवे
मानो + अः = मानवः

(iii) ऐ + स्वर
↓
आय्

नै + अकः
न् ऐ + अकः
न् आय् + अकः
नायकः

चै + अकः = चायकः
शै + अकः = शायकः
गै + अकः = गायकः

Scanned by CamScanner

रै + ओ = रायौ
क्षै + अक: = क्षायक:
जै + अक: = जायक:
विधै + अक: = विधायक:
ग्लै + अति = ग्लायति
चिन्तै + अति = चिन्तयति

(iv) औ + स्वर
↓
आव्

पौ + अक:
प् औ + अक:
↓
प् आव् + अक:
पावक:

धौ + अक: = धावक:
श्रौ + अक: = श्रावक:
भौ + अक: = भावक:
भौ + उक: = भावुक:
द्रौ + अपि = द्रावपि
उभौ + अपि = उभावपि

Scanned by CamScanner

नौ + अम् = नावम्
प्रस्तौ + अकः = प्रस्तावकः
प्रभौ + अः = प्रभावः

विशेष

मत्यै + आशा = मत्यायाशा
लक्ष्म्यै + उद्यतः = लक्ष्म्यायुद्यत
श्रियै + उद्यतः = श्रियायुद्यतः
नद्यै + उद्यतः = नद्यायुद्यतः
सखे + आगच्छति = सखयागच्छति
भानो + इति = भानविति
गुरो + इह = गुरविह
हरे + इह = हरयिह
विष्णो + इह = विष्णविह
इन्दौ + उदेति = इन्दावुदेति
गुरौ + उत्कः = गुरावुत्कः
ग्रीष्मे + आतपः = ग्रीष्मयातपः
वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः

Scanned by CamScanner

अयादि संधि में विशेष

अयादि संधि में कहीं-कहीं स्वर के बाद व्यञ्जन वर्ण के रहने पर भी संधि कार्य होता है।

नियम - "वान्तो यि प्रत्यये"

- अयादि संधि के प्रसंग में ओ के स्थान अव् तथा औ के स्थान पर आव् हो जाता है यदि पर में यकार से प्रारम्भ होने वाला प्रत्यय हो।

ओ → अव्
औ → आव् + य (प्रत्यय का हो)

- यत्, ण्यत् और क्यप् प्रत्यय 'य' से प्रारम्भ होने वाले प्रत्यय हैं

यत्
ण्यत् > य (यम्)
क्यप्

गो + यम्	नौ + यम्
ग् ओ + यम्	न् औ + यम्
↓ अव्	↓ आव्
गव्यम्	नाव्यम्

Scanned with

Scanned by CamScanner

भो + यम् = भव्यम्

हो + यम् = हव्यम्

लो + यम् = लव्यम्

श्रो + यम् = श्रव्यम्

लौ + यम् = लाव्यम्

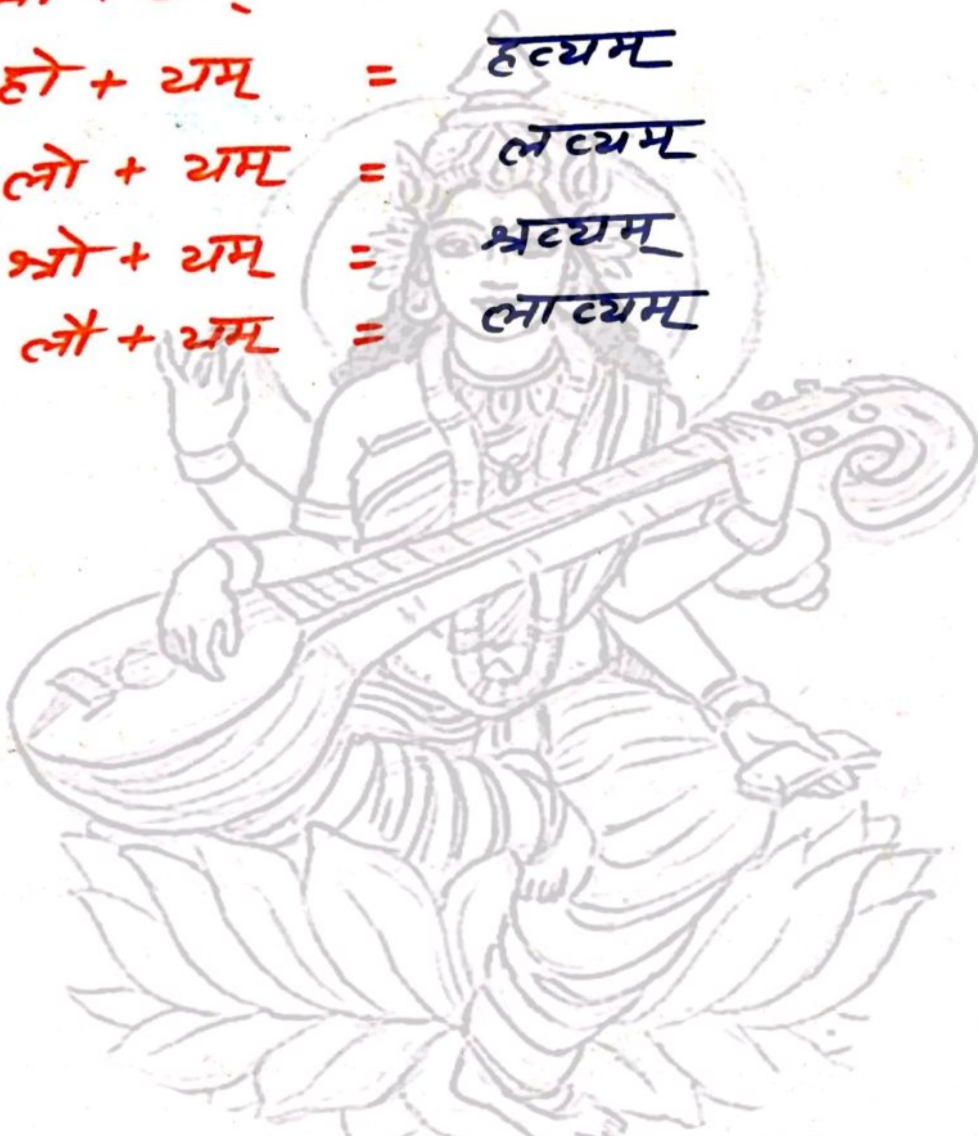

Scanned by CamScanner

6. पूर्वरूप संधि :- "(एङः पदान्तादति)"

- यह अयादि सन्धि का अपवाद है।

नियम → पद के अन्त में स्थित ए या ओ स्वरों के बाद ह्रस्व 'अ' के रहने पर पूर्व और पर वर्ण के स्थान पर पूर्व वर्ण एकादेश हो जाता है। यहाँ सन्धि रूप में अ के स्थान पर अवग्रह (ऽ) का चिह्न लगा दिया जाता है तथा इसका उच्चारण नहीं होता है।

संस्कृत में शब्दरूप और धातुरूप को पद कहते हैं।

पद के अन्त मे ए/ओ + अ

जैसे- हरे + अव

हर् ए + अव

ए

हरेऽव

विष्णो + अव

विष्णु ओ + अव

ओ

विष्णोऽव

Scanned by CamScanner

ग्रामे + अपि = ग्रामेऽपि
ते + अपि = तेऽपि
ते + अकर्मकाः = तेऽकर्मकाः
वने + अस्ति = वनेऽस्ति
लोके + अस्मिन् = लोकेऽस्मिन्
गृहे + अत्र = गृहेऽत्र
ते + अस्तु = तेऽस्तु

गुरो + अत्र = गुरोऽत्र
सो + अपि = सोऽपि
को + अस्ति = कोऽस्ति
साधो + अस्ति = साधोऽस्ति
धन्यो + असि = धन्योऽसि
आधारो + अधिकरणम् = आधारोऽधिकरणम्
एचो + अयवायावः = एचोऽयवायावः

Scanned by CamScanner

विशेष

यदि बाद में ह्रस्व 'अ' नहीं हो या पूर्व में ए तथा ओ किसी पद के अन्त में नहीं हो तो पूर्वरूप सन्धि नहीं होती अपितु अयादि सन्धि हो जाती है।

अयादि संधि

- ते + आगच्छन्ति ⇒ तयागच्छन्ति (ह्रस्व 'अ' नहीं)
- ने + अनम् ⇒ नयनम् (पदान्त में ए/ओ नहीं)
- भो + अनम् ⇒ भवनम् (पदान्त में ए/ओ नहीं)

Scanned by CamScanner

⑦ पररूप सन्धि :- ("एङि पररूपम्")

यह वृद्धि सन्धि का अपवाद है।

नियम :-

उपसर्ग सम्बन्धी अ या आ के बाद धातु का ए या ओ रहने पर पूर्व और पर वर्ण के स्थान पर पर वर्ण एकादेश होता है।

उपसर्ग का (२२ प्रादि) अ/आ + ए/ओ (धातु/धातुरूप का)

× ✓

प्र + एजते

प्र् अ + एजते = ए

✓ प्रेजते

उप + एजते = उपेजते

परा + एजते = परेजते

प्र + एलयति = प्रेलयति

उप + एषयति = उपेषयति

परा + एषयति = परेषयति

उप + एलयति = उपेलयति

Scanned by CamScanner

उप + औषति = उप् अ + औ षति → औ → उपौषति

परा + ओषति = परौषति

प्र + ओषति = प्रौषति

विशेष

यदि उपसर्ग सम्बन्धी अ/आ के बाद इण् और एध् धातु का रूप हो तो "वृद्धि सन्धि" ही होती है।

प्र + एधते = प्रैधते
उप + एधते = उपैधते
प्र + एति = प्रैति
उप + एति = उपैति

वृद्धि कार्य होता है।

उपसर्ग (अ/आ) + इण् (एति) / एध् (एधते) > वृद्धि कार्य ही होता है।

Scanned by CamScanner

विशेष

वार्तिक - "शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्"

शकन्धु गण में पठित शब्दों की 'टि' को पररूप कहना चाहिए।

'टि'

- शब्द के अन्तिम स्वर को या अन्तिम स्वर के बाद व्यञ्जन के रहने पर उस व्यञ्जन सहित स्वर को 'टि' कहते हैं।

शक + अन्धुः
शक् अ + अन्धुः
शकन्धुः

कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः
कुल + अटा = कुलटा
मार्त + अण्डः = मार्तण्डः
मृत + अण्डः = मार्तण्डः

(सवर्ण दीर्घ का अपवाद)

हल + ईषा = हल् ईषा = हलीषा
लाङ्गल + ईषा = लाङ्गल् ईषा = लाङ्गलीषा

(गुण का अपवाद)

Scanned by CamScanner

मनस् + ईषा = मन् अस् ईषा = मनीषा

अश्मन् + अन्तकः = अश्म् अन् ईषा = अश्मन्तकः

✓ पतत् + अञ्जलिः = पत् अत् अञ्जलिः = पतञ्जलिः

(जश्त्व संधि का अपवाद)

विशेष उदाहरण

(i) सीम + अन्त : → सीमान्तः (सवर्ण दीर्घ) - / → सीमन्तः (पररूप) -

(ii) सार + अङ्गः → साराङ्गः (सवर्ण दीर्घ) / → सारङ्गः (पररूप)

(iii) स्थूल + ओतुः → स्थूलौतुः (वृद्धि) / → स्थूलोतुः (पररूप)

(iv) कण्ठ + ओष्ठम् → कण्ठौष्ठम् (वृद्धि) / → कण्ठोष्ठम् (पररूप)

(v) दन्त + ओष्ठम् → दन्तौष्ठम् (वृद्धि) / → दन्तोष्ठम् (पररूप)

Scanned by CamScanner

<4.> प्रकृतिभाव सन्धि :→

स्वभावेन अवस्थिति : प्रकृतिभाव :
अर्थात् सन्धि कार्य प्राप्त होने पर भी सन्धि कार्य नही होना प्रकृतिभाव सन्धि है।
अनेक प्रसंगो मे दीर्घ, यण आदि सन्धियाँ प्राप्त होने पर भी सन्धि कार्य नही करके यथा स्थिति का रहना प्रकृतिभाव कहलाता है।
मुख्यत: प्रकृतिभाव दो प्रकार से होता है।
(i) प्लुत संज्ञा के बाद प्रकृतिभाव
(ii) प्रगृह्य संज्ञा के बाद प्रकृतिभाव

प्रकृतिभाव का सूत्र-
प्लुत प्रगृह्या अचि नित्यम्
प्लुत संज्ञा और प्रगृह्य संज्ञा के बाद किसी भी स्वर के रहने पर प्रकृतिभाव हो जाता है।

Scanned by CamScanner

प्लुत संज्ञा
प्रगृह्य संज्ञा + स्वर ⇒ प्रकृतिभाव

प्रगृह्य संज्ञा का सूत्र-

"ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्"

द्विवचन सम्बन्धी दीर्घ ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त शब्दों की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

प्रगृह्य संज्ञा होने के बाद प्रकृतिभाव हो जाती है।

हरी + एतौ ⇒ हरी एतौ
मुनी + एतौ ⇒ मुनी एतौ
कपी + अमू ⇒ कपी अमू
} यण् का बाधक

विष्णू + इमौ ⇒ विष्णू इमौ
गुरू + एतौ ⇒ गुरू एतौ
भानू + इमौ ⇒ भानू इमौ
} यण् का अपवाद

Scanned by CamScanner

लभेते + इमौ	⇒	लभेते इमौ		अयादि का बाधक
पचेते + इतौ	⇒	पचेते एतौ		
गङ्गे + एते	⇒	गङ्गे एते		

लते + अमू	⇒	लते अमू		पूर्वरूप का बाधक
रमे + आस्ते	⇒	रमे आस्ते		

YouTube SUBSCRIBE NOW Sanskrit saraswati ramkumar shashtri
Find us on: facebook रामकुमार शास्त्री संस्कृत सरस्वती @Sanskritsaraswati
Join Us on Telegram रामकुमार शास्त्री संस्कृत सरस्वती https://t.me/sns12 मोबाईल एप : संस्कृत सरस्वती

Scanned by CamScanner